* ऐच्छिक - V = गाँधी दर्शन = Truth and God

* महात्मा गाँधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को पोरबन्दर में

→ भारत के उत्थान हेतु उन्होंने दो बातों की तात्कालिक अनिवार्यता महसूस हुई: —
1. राजनीतिक स्वतंत्रता पाने की अनिवार्यता
2. दलित एवं अछूत वर्गों की स्थिति में सुधार

→ उनके विचारों पर
टालस्टाय }
थोरो } दोनों का प्रभाव पड़ा

→ सामाजिक अवज्ञा — थोरो
The Kingdom of God is within you - टालस्टाय
My Experiments with Truth - गाँधी

* ईश्वर एवं सत्य (God and Truth)

→ गाँधी जी का ईश्वर-विचार 'वैष्णव' मत के ईश्वर विचार के समान है।

→ गाँधी जी के अनुसार ईश्वर विचार के द्वारा न मात्र बौद्धिक समस्याओं को ही शान्त नहीं करते, बल्कि इस विचार से जीवन को बल, सन्तोष तथा भावनात्मक संबल भी प्राप्त होता है।

* गाँधी जी ने सर्वप्रथम कहा - "ईश्वर सत्य है" (I)

→ पुनः विचार में परिवर्तन लाते हैं और कहते हैं —
"सत्य ही ईश्वर है" (II)

विचार में परिवर्तन के कारण —
→ ईश्वर को लेकर मतान्तर हो सकता है पर सत्य को लेकर नहीं।

→ ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण: —
→ उनका विचार है कि 'ईश्वर' की चेतना आत्मिक अनुभूति का विषय है, जो किसी व्यक्ति को किसी विशेष क्षण में एक आध्यात्मिक अनुभूति के रूप में उपलब्ध हो सकती है।

प्रमाण: —
(i) कारणता संबंधी प्रमाण
(ii) प्रयोजनमूलक प्रमाण
(iii) नैतिक प्रमाण - अन्तरात्मा की आवाज से।
(iv) उपयोगितावादी प्रमाण -

* ईश्वर के गुण :—

1. सर्वव्यापी
2. विधान / नियम
3. प्रेमरूप

* ईश्वर को "प्रेमरूप" कहने का आशय है कि 'प्रेम' के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग ऐसा नहीं है जिससे ईश्वर की अनुभूति हो सके। गाँधी जी के अनुसार हर व्यक्ति में ईश्वर का अंश है, तथा इसी कारण हर व्यक्ति में प्रेम की शक्ति है।

→ गाँधी जी का 'प्रेम' विचार उनके सत्याग्रह एवं अहिंसा का मूलाधार है।

* जगत का स्वरूप

→ जगत सत् है।
→ गाँधी जी के अनुसार जगत ईश्वर की अभिव्यक्ति है, सर्वव्यापी सत् का ही एक व्यक्त रूप है।
→ सृष्टि ईश्वर की अभिव्यक्ति है।
→ तत्त्वमीमांसीय दृष्टि से सृष्टि सत् एवं सीमित है।

* कर्म एवं पुनर्जन्म

→ गाँधी जी पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
→ " " कर्मसिद्धांत में भी विश्वास करते थे।

* अहिंसा Non-violence

→ 'सत्य' एवं 'अहिंसा' गाँधी जी के समाज विचारधारा का मूल केन्द्रीय विषय है।
→ सत्य साध्य है जबकि
→ अहिंसा साधन है।
→ अहिंसा का पालन मन, कर्म एवं वचन तीनों से होना चाहिए।
→ अहिंसा का आधारभूत स्वरूप 'प्रेम' है।

नैतिकता, आदर्श जीवन के नैतिक आधार

→ गांधी की दृष्टि में नैतिकता धर्म का अनिवार्य पक्ष है।

* → अपने से ऊपर उठकर अन्य के प्रति प्रेम करना ही तो नैतिकता है।

→ नैतिकता के लिए स्वतंत्रता आवश्यक है अर्थात ऐच्छिक क्रिया आवश्यक है।

→ 'सत्याग्रह' नैतिकता का सर्वोत्तम रूप है।

* मूल सद्गुण (Cardinal Virtues) - (7)

→ मूल सद्गुण वे ही है जो सत्याग्रही के सत्याग्रही होने की मूल आवश्यकताएँ हैं।

→ भारतीय नीतिशास्त्र में भी पाँच सद्गुणों की चर्चा हुयी है —

(1) अहिंसा —
(2) सत्य —
(3) अस्तेय —
(4) अपरिग्रह —
(5) ब्रह्मचर्य —

(5) +

गाँधी की दृष्टि में इन पाँचों का मनसा मन, वचन एवं कर्म से अनुशीलन होना चाहिए।

* गाँधी जी इन पाँच सद्गुणों को स्वीकार के अलावे दो अन्य सद्गुणों को भी स्वीकारते हो, वे हैं —

(6) अभय : — / निर्भय (2)
(7) ईश्वर के प्रति आस्था

* गाँधी जी व्यावहारिक आदर्शवादी (Practical Idealist) थे।

* वर्ण-व्यवस्था

→ गाँधी जी वैदिककालीन वर्णव्यवस्था के समर्थक थे। अर्थात व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुरूप कार्य करना चाहिए। कर्म कर्म का आधार (जन्म) का विरोधी थे।